Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
(A National Multidisciplinary bi-lingual Quarterly Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: (Cosmos: 7.866 & I2OR: 5.675) Volume 16, No. 02, April-June, 2026, pp. 193-201

द्वितीय विश्वयुद्ध में जोधपुर राज्य सेना की भूमिका: सैन्य आधुनिकीकरण, युद्ध–अभियानों और रियासती योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. ललित कुमार पंवार*

सहायक आचार्य इतिहास, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

*Corresponding Author: lalitkpanwar7@gmail.com

Citation: *पंवार, ललित (2026). द्वितीय विश्वयुद्ध में जोधपुर राज्य सेना की भूमिका: सैन्य आधुनिकीकरण, युद्ध–अभियानों और रियासती योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 16(02), 193–201.*

सार

द्वितीय विश्वयुद्ध (1939–1945) में ब्रिटिश भारतीय सेना के साथ–साथ देशी रियासतों की सैन्य टुकड़ियों ने भी मित्र राष्ट्रों के युद्ध–प्रयासों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। राजपूताना की प्रमुख रियासतों में जोधपुर राज्य इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय था। महाराजा उम्मेद सिंह के शासनकाल में जोधपुर राज्य सेना ने न केवल अपनी सैन्य शक्ति का विस्तार किया, बल्कि युद्ध की बदलती तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप संगठन और प्रशिक्षण में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए। युद्ध के आरंभ में लगभग 1,700 सैनिकों वाली जोधपुर राज्य सेना में जोधपुर सरदार रिसाला, जोधपुर सरदार इन्फैंट्री, म्यूल ट्रूप, सैन्य अस्पताल और किले की रक्षा टुकड़ी जैसी इकाइयाँ सम्मिलित थीं। युद्धकाल में इसकी सैन्य संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इस अध्ययन का प्रमुख केंद्र जोधपुर लांसर्स और जोधपुर सरदार इन्फैंट्री की युद्धकालीन भूमिका है। जोधपुर लांसर्स का पारंपरिक अश्वारोही सैन्य इकाई से यंत्रीकृत रेजिमेंट में परिवर्तन राज्य की सैन्य व्यवस्था में आधुनिक तकनीक के प्रवेश का महत्त्वपूर्ण उदाहरण था। यंत्रीकरण के पश्चात् इस इकाई ने मध्य–पूर्व और फारस में सामरिक प्रतिष्ठानों तथा महत्त्वपूर्ण आपूर्ति मार्गों की सुरक्षा से संबंधित दायित्व निभाए। दूसरी ओर, जोधपुर सरदार इन्फैंट्री की इरिट्रिया और मिस्र में तैनाती के बाद सितंबर 1943 के सालेरनो अभियान में भागीदारी विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। सालेरनो में इस इकाई की कंपनियों ने समुद्र तट पर सैन्य सामग्री उतारने, आपूर्ति व्यवस्था स्थापित करने तथा अग्रिम सैन्य अभियानों के लिए आवश्यक रसद सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अधिकारियों और सैनिकों को उनकी सेवाओं एवं वीरता के लिए सैन्य सम्मान भी प्रदान किए गए। प्रस्तुत शोधपत्र उपलब्ध सैन्य विवरणों के आधार पर जोधपुर राज्य सेना के संगठन, यंत्रीकरण, विदेशी युद्धक्षेत्रों में तैनाती और युद्धकालीन विस्तार का ऐतिहासिक विश्लेषण करता है। अध्ययन का मूल तर्क है कि द्वितीय विश्वयुद्ध में जोधपुर राज्य का योगदान केवल ब्रिटिश युद्ध–प्रयासों को सैनिक उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं था; इस युद्ध ने राज्य की पारंपरिक सैन्य व्यवस्था को आधुनिक युद्ध–पद्धति, तकनीकी प्रशिक्षण और विस्तृत सैन्य संगठन के अनुरूप रूपांतरित करने की प्रक्रिया को भी गति प्रदान की। इस प्रकार जोधपुर राज्य सेना का युद्धकालीन अनुभव रियासती सैन्य इतिहास और आधुनिक भारतीय सैन्य परंपरा के संक्रमण को समझने के लिए एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक संदर्भ प्रस्तुत करता है।

शब्दकोश: *द्वितीय विश्वयुद्ध, जोधपुर राज्य सेना, महाराजा उम्मेद सिंह, जोधपुर लांसर्स, जोधपुर सरदार इन्फैंट्री, सैन्य आधुनिकीकरण, सालेरनो अभियान, भारतीय रियासतें।*

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

प्रस्तावना

द्वितीय विश्वयुद्ध (1939–1945) आधुनिक विश्व इतिहास की ऐसी निर्णायक घटना थी, जिसने केवल यूरोप की राजनीतिक और सामरिक व्यवस्था को ही प्रभावित नहीं किया, बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन अथवा उससे संबद्ध एशियाई और अफ्रीकी क्षेत्रों को भी व्यापक रूप से युद्ध–प्रयासों से जोड़ दिया। ब्रिटिश भारत इस वैश्विक संघर्ष में सैनिक, आर्थिक और सामरिक संसाधनों का एक महत्त्वपूर्ण आधार बना। भारतीय सेना के साथ देशी रियासतों की सैन्य इकाइयों ने भी विभिन्न स्तरों पर मित्र राष्ट्रों के युद्ध–प्रयासों में भाग लिया। इस व्यापक परिप्रेक्ष्य में राजपूताना की जोधपुर रियासत का योगदान विशेष महत्त्व रखता है। जोधपुर की सैन्य परंपरा पहले से सुदृढ़ थी और प्रथम विश्वयुद्ध में जोधपुर लांसर्स की सक्रिय भूमिका ने इसकी विशिष्ट पहचान स्थापित कर दी थी। द्वितीय विश्वयुद्ध ने इसी सैन्य परंपरा को आधुनिक यंत्रीकृत युद्ध की आवश्यकताओं के अनुरूप रूपांतरित होने का अवसर प्रदान किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के आरंभ के समय जोधपुर राज्य सेना के कमांडेंट ब्रिगेडियर रोनाल्ड कार्ड्यू डंकन थे, जिन्होंने युद्ध के पश्चात् अपने महत्त्वपूर्ण ग्रंथ History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45 में जोधपुर की सैन्य इकाइयों की युद्धकालीन गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया। डंकन स्वयं युद्ध के समय जोधपुर स्टेट फोर्सेज के कमांडेंट थे, इसलिए उनका विवरण इस विषय के अध्ययन के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण समकालीन स्रोत है। उनकी पुस्तक का प्रथम संस्करण 1946 में जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस से प्रकाशित हुआ था। सैन्य इतिहासकार जे. एस. एम. पर्किन्स द्वारा भी इस कृति का उल्लेख किया गया है। युद्ध के आरंभ में जोधपुर राज्य सेना पाँच प्रमुख इकाइयों में संगठित थी और इसकी कुल सैन्य संख्या लगभग 1,700 थी। युद्ध की बढ़ती आवश्यकताओं के साथ इसका संगठन और सैन्य क्षमता दोनों विस्तृत हुए।

जोधपुर राज्य सेना की भूमिका का महत्त्व केवल सैनिक संख्या अथवा ब्रिटिश युद्ध–प्रयासों को सैन्य सहायता प्रदान करने तक सीमित नहीं था। इसका सबसे उल्लेखनीय पक्ष परंपरागत अश्वारोही सैन्य व्यवस्था का आधुनिक यंत्रीकृत युद्ध–पद्धति की ओर संक्रमण था। जोधपुर सरदार रिसाला, जो आगे चलकर जोधपुर लांसर्स के रूप में जाना गया, को युद्धकाल में यंत्रीकृत सैन्य इकाई के रूप में पुनर्गठित किया गया। इसके सैनिकों को मोटर वाहनों, बख्तरबंद गाड़ियों तथा आधुनिक संचार और युद्ध तकनीकों का प्रशिक्षण दिया गया। इसके बाद इस इकाई ने मध्य–पूर्व और फारस जैसे सामरिक क्षेत्रों में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। दूसरी ओर, जोधपुर सरदार इन्फैंट्री की इरिट्रिया, मिस्र और अंततः इटली में तैनाती ने जोधपुर राज्य की सैन्य भागीदारी को प्रत्यक्ष अंतरराष्ट्रीय युद्धक्षेत्र तक पहुँचा दिया। सितंबर 1943 के सालेरनो अभियान में इस इकाई की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही।

इस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध जोधपुर राज्य सेना के इतिहास में केवल एक विदेशी युद्ध में भागीदारी की घटना नहीं था, बल्कि सैन्य संगठन, तकनीक, प्रशिक्षण और युद्ध–अनुभव में व्यापक परिवर्तन का काल भी था। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य जोधपुर राज्य सेना के इसी परिवर्तन और योगदान का ऐतिहासिक विश्लेषण करना है। इसमें विशेष रूप से तीन पक्षोंकृसैन्य आधुनिकीकरण, विदेशी युद्धक्षेत्रों में जोधपुर की सैन्य इकाइयों की भूमिका तथा एक देशी रियासत के रूप में जोधपुर के युद्धकालीन योगदानकृको केंद्र में रखा गया है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार एक पारंपरिक रियासती सैन्य संगठन द्वितीय विश्वयुद्ध की परिस्थितियों में आधुनिक युद्ध–व्यवस्था का अंग बना और इस प्रक्रिया ने जोधपुर के सैन्य इतिहास को एक नया स्वरूप प्रदान किया।

जोधपुर राज्य सेना की युद्ध–पूर्व स्थिति और सैन्य संगठन

द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व जोधपुर राज्य की सैन्य व्यवस्था किसी आकस्मिक युद्धकालीन निर्माण का परिणाम नहीं थी, बल्कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से चले आ रहे संगठनात्मक सुधारों और सैन्य पुनर्गठन की परिणति थी। प्रारम्भिक सुधारों में सैन्य टुकड़ियों के लिए निश्चित कैडर, वेतनमान, भर्ती–व्यवस्था, मानकीकृत

हथियार तथा नियमित ड्रिल की व्यवस्था की गई। मेजर बीटसन की देखरेख में सरदार रिसाला के संगठन और प्रशिक्षण में किए गए इन परिवर्तनों ने पारंपरिक घुड़सवार बल को अधिक अनुशासित सैन्य इकाई का स्वरूप प्रदान किया।

इस सैन्य संगठन को वास्तविक युद्ध–अनुभव भी प्राप्त था। प्रथम विश्वयुद्ध में जोधपुर लांसर्स ने फ्रांस में न्यूव शैपेल और कैम्ब्रे के अभियानों में भाग लिया तथा 1918 में फिलिस्तीन भेजे जाने से पूर्व मिस्र में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। फिलिस्तीन अभियान के दौरान उसकी युद्धक भूमिका ने जोधपुर की अश्वारोही सैन्य परंपरा को व्यावहारिक युद्ध–अनुभव से जोड़ा (Shah 112 (Van Wart 206-10 (Reu 596-97)। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद, हालांकि, युद्धकाल में गठित अतिरिक्त इन्फैंट्री को भंग किया गया और सरदार रिसाला की संख्या भी घटाई गई; सितंबर 1921 में सरदार रिसाला में 970 तथा सरदार इन्फैंट्री में 416 सैनिक दर्ज थे (Shah 115(Marwar Administration Report 1921–22, 17)।

1920 के दशक का पुनर्गठन द्वितीय विश्वयुद्ध–पूर्व सैन्य संरचना के लिए अधिक निर्णायक सिद्ध हुआ। 1922 में सरदार रिसाला से संबद्ध संसाधनों के आधार पर ट्रांसपोर्ट कॉर्प्स गठित किया गया, रिसाला अस्पताल को मिलिट्री स्टेशन हॉस्पिटल में परिवर्तित किया गया तथा सरदार इन्फैंट्री को पुनर्गठित किया गया। 1924 में फोर्ट आर्टिलरी समाप्त कर इन्फैंट्री को पूर्ण बटालियन के स्तर तक विकसित किया गया और 1926 में इसे 'A' Class Battalion की मान्यता मिली।

फलतः सितंबर 1939 तक जोधपुर के पास एक सुव्यवस्थित राज्य सेना विद्यमान थी। युद्ध आरम्भ होने पर इसकी कुल संख्या लगभग 1,700 थी। इसका प्रमुख युद्धक आधार सरदार रिसाला और सरदार इन्फैंट्री थे, जबकि म्यूल ट्रूप, फोर्ट गार्ड तथा मिलिट्री हॉस्पिटल जैसी सहायक संस्थाएँ परिवहन, सुरक्षा और चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करती थीं। फोर्ट गार्ड की स्थापना दिसंबर 1935 में सरदार इन्फैंट्री की दो प्लाटून के स्थान पर की गई थी। इस प्रकार 1939 तक जोधपुर राज्य सेना में परंपरागत अश्वारोही सैन्य संस्कृति के साथ नियमित इन्फैंट्री, परिवहन, सुरक्षा और चिकित्सा सेवाओं का संस्थागत समावेश हो चुका था। यही पूर्ववर्ती संगठन द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान तीव्र सैन्य विस्तार और यंत्रीकरण के लिए आधारभूत संरचना बना।

लांसर्स एवं सैन्य आधुनिकीकरण

जोधपुर लांसर्स का द्वितीय विश्वयुद्धकालीन आधुनिकीकरण अचानक उत्पन्न प्रक्रिया नहीं था, बल्कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से विकसित सैन्य पुनर्गठन की परिणति था। 1888 में 'इम्पीरियल सर्विस ट्रूप्स' योजना के अंतर्गत जोधपुर ने संगठित घुड़सवार सैन्य इकाइयों के निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाया और सरदार रिसाला को नियमित प्रशिक्षण, निर्धारित सैन्य पदानुक्रम तथा आधुनिक शस्त्र–सज्जा प्रदान की गई। प्रशिक्षण के लिए अधिकारियों और सैनिकों को पूना, मेरठ, रुड़की और अम्बाला भेजा गया, जिसके फलस्वरूप सरदार रिसाला एक प्रभावी लाइट कैवेलरी इकाई के रूप में विकसित हुआ। प्रथम विश्वयुद्ध में फ्रांस और फिलिस्तीन में सक्रिय सेवा तथा 23 सितंबर 1918 को हाइफा अभियान में भागीदारी ने इस सैन्य परंपरा को और सुदृढ़ किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध ने इस परंपरागत अश्वारोही स्वरूप में निर्णायक तकनीकी परिवर्तन किया। नवंबर 1939 में सरदार रिसाला को उत्तर–पश्चिम सीमा पर रिसालपुर स्थित प्रथम भारतीय कैवेलरी ब्रिगेड में सम्मिलित होने का आदेश मिला और जनवरी 1940 में रेजिमेंट वहाँ पहुँच गई। 10 फरवरी 1941 को गवर्नर–जनरल–इन–काउंसिल ने इसे प्दकपंद डवजवत त्महपउमदज के रूप में यंत्रीकृत करने का निर्णय लिया। इसके फलस्वरूप रेजिमेंट की संरचना और प्रशिक्षण–पद्धति दोनों का पुनर्गठन आवश्यक हो गया। यह चयन इसलिए भी महत्त्वपूर्ण था कि जोधपुर लांसर्स यंत्रीकरण के लिए चुनी जाने वाली पहली भारतीय रियासती रेजिमेंट थी; इस परिवर्तन पर लगभग 28 लाख रुपये का व्यय भारत सरकार द्वारा वहन किया गया।

यंत्रीकरण का वास्तविक अर्थ केवल घोड़ों के स्थान पर मोटर–वाहनों का प्रयोग नहीं था। मार्च–अप्रैल 1941 में अधिकारियों और गैर–कमीशंड अधिकारियों को Royal Deccan Horse, 13th Lancers, 8th Cavalry and 19th Lancers के साथ ड्राइविंग तथा वाहन–रखरखाव का प्रशिक्षण दिया गया। मई में प्रशिक्षण हेतु 22 नागरिक लॉरियाँ और 13 एल्बियन लॉरियाँ उपलब्ध कराई गईं। गर्मियों के दौरान Fighting Vehicles School तथा अन्य सैन्य केंद्रों में ड्राइविंग एवं रखरखाव, आयुध, मशीनगन, मोटर–मैकेनिक्स और सिग्नल संबंधी प्रशिक्षण जारी रहा; यद्यपि खींचने और उपकरणों की कमी इस प्रक्रिया में व्यावहारिक बाधा बनी रही।

अक्टूबर 1941 में लांसर्स को 18वीं भारतीय डिवीजन की Divisional Reconnaissance Regiment के रूप में सिकंदराबाद स्थानांतरित किया गया। रिसालपुर में लगभग बीस महीनों तक ब्रिटिश और भारतीय सैन्य इकाइयों के साथ संयुक्त प्रशिक्षण ने रेजिमेंट को आधुनिक बख्तरबंद संरचना में कार्य करने का अनुभव प्रदान किया। बाद में पुराने मार्मन–हैरिंगटन बख्तरबंद गाड़ियों को लाने के स्थान पर अधिक उन्नत हंबर III और डेमलर बख्तरबंद कारें अपनी गईं, जिसके लिए ड्राइविंग, रखरखाव और गनरी में पुनः प्रशिक्षण आवश्यक हुआ। इस प्रकार जोधपुर लांसर्स का यंत्रीकरण केवल उपकरण का परिवर्तन नहीं, बल्कि संगठन, प्रशिक्षण और युद्ध–पद्धति का संरचनात्मक रूपांतरण था। अश्व–आधारित रेजिमेंटी कैवेलरी से आधुनिक टोही रेजिमेंट में उसका परिवर्तन द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जोधपुर राज्य की सैन्य आधुनिकता का सबसे प्रत्यक्ष उदाहरण था।

सरदार इन्फैंट्री एवं सालेरनो

जोधपुर सरदार इन्फैंट्री की द्वितीय विश्वयुद्ध में सक्रिय भूमिका सितंबर 1940 में उस समय आरंभ हुई, जब बटालियन को नौशेरा में प्रशिक्षण के लिए भेजने का आदेश मिला। 31 अक्टूबर 1940 को यह जोधपुर से रवाना हुई और 3 नवंबर को नौशेरा पहुँची। उस समय बटालियन में 12 स्टेट ऑफिसर, 2 स्पेशल सर्विस ऑफिसर, 2 स्टेट ऑफिसर कैडेट, 21 इंडियन ऑफिसर, 628 अन्य भारतीय सैनिक तथा 56 सहायक कर्मचारी थे। नौशेरा और तत्पश्चात् क्वेटा में प्रशिक्षण के बाद जून 1941 में इसे समुद्रपार सेवा के लिए रवाना किया गया।

22 जून 1941 को बटालियन इरिट्रिया के मसावा पहुँची। प्रारंभिक प्रशिक्षण के बाद असमारा में इसे मुख्यतः सुरक्षा और स्टेशन संबंधी दायित्व सौंपे गए। बाद में मसावा में लगभग 6,000 इतालवी युद्धबंदियों की निगरानी इसकी प्रमुख जिम्मेदारी बनी। अप्रैल 1942 में मिस्र रवाना होने तक बटालियन लगभग दस महीने इरिट्रिया में रही। यद्यपि इस अवधि में उसे प्रत्यक्ष युद्ध का अवसर नहीं मिला, किंतु विभिन्न सैन्य इकाइयों के साथ प्रशिक्षण और सुरक्षा कार्यों ने उसे व्यावहारिक युद्धकालीन अनुभव प्रदान किया।

सरदार इन्फैंट्री की भूमिका में निर्णायक परिवर्तन 12 मई 1943 को आया, जब इसे एक महत्त्वपूर्ण अभियान के लिए चुना गया और इसकी सात स्वतंत्र कंपनियाँ, प्रत्येक में दो अधिकारी और तीन प्लाटून, गठित करने का आदेश दिया गया। इन कंपनियों को मेजर राम सिंह के नेतृत्व में नं. 35 Beach Group का अंग बनाया गया। इस समूह का उद्देश्य आक्रमणकारी सेना के पीछे समुद्र तट को व्यवस्थित कर गोला–बारूद, रसद और अन्य सैन्य सामग्री की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करना था। पाँच जोधपुरी कंपनियों को समुद्र तट पर सामग्री भेजी तथा एक–एक कंपनी को गोला–बारूद और सप्लाई डिपो के लिए निर्धारित किया गया। इस विशेष कार्य के लिए सीरिया तथा मिस्र के Kabreet संयुक्त प्रशिक्षण केंद्र में तकनीकी प्रशिक्षण दिया गया।

8–9 सितंबर 1943 की मध्यरात्रि में यह सैन्य दल सालेरनो की खाड़ी पहुँचा। मित्र राष्ट्रों की प्रथम आक्रमण सेना के उतरने के कुछ घंटों बाद, प्रातः 6:46 बजे मेजर राम सिंह यूरोपीय मुख्यभूमि पर उतरे। जर्मन तोपखाने, मशीनगनों और हवाई हमलों के बीच सरदार इन्फैंट्री की कंपनियों ने निर्धारित स्थानों पर पहुँचकर अपना कार्य आरंभ किया। अगले सत्रह दिनों तक पाँच बीच कंपनियों ने LCT और LST जहाजों से गोला–बारूद एवं अन्य सामग्री उतारकर उसे निर्धारित स्थानों तक पहुँचाया, जबकि दो अन्य कंपनियों ने डिपो में

सामग्री को वर्गीकृत कर विस्तृत सैन्य इकाइयों को जारी किया। यह कार्य दिन–रात चलता रहा। उल्लेखनीय रूप से सैनिकों ने औसतन प्रतिदिन चौदह घंटे से अधिक कार्य किया और समुद्र तटों से निकाली गई सामग्री की मात्रा प्रारंभिक अनुमान से लगभग तीन गुना रही।

इस अभियान में सरदार इन्फैंट्री की भूमिका केवल रसद तक सीमित नहीं रही। कैप्टन डूंगर सिंह के नेतृत्व में 60 सैनिकों की एक टुकड़ी ने दुर्गम और शत्रु की निगरानी वाले क्षेत्र में अग्रिम ब्रिटिश कंपनियों तक गोला–बारूद, भोजन और पानी पहुँचाया तथा लौटते समय घायलों को भी पीछे लाया। इस कार्य की प्रशंसा 46जी Division और 139जी Infantry Brigade के वरिष्ठ अधिकारियों ने लिखित रूप में की।

सालेर्नो अभियान में प्रदर्शित नेतृत्व और साहस के लिए मेजर राम सिंह को विशिष्ट सेवा आदेश (DSO) तथा कैप्टन डूंगर सिंह को मिलिट्री क्रॉस (MC) प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त जमादार गंगा राम को MBE तथा भूरा राम, शैतान सिंह और किशोर सिंह को मिलिट्री मेडल प्रदान किए गए। उपलब्ध आधिकारिक पुरस्कार उद्धरण में राम सिंह को 9–27 सितंबर के दौरान सातों कंपनियों के प्रभावी नेतृत्व तथा डूंगर सिंह को 22–25 सितंबर के बीच दुश्मन की मोर्टार और मशीन–गन की आग के बीच अग्रिम मोर्चों तक रसद पहुंचाने के लिए विशेष रूप से उल्लेखित किया गया है।

अतः सालेरनो में सरदार इन्फैंट्री का योगदान प्रत्यक्ष आक्रमणकारी पैदल सेना की भूमिका से भिन्न, किंतु अभियान की निरंतरता के लिए सामरिक रूप से आवश्यक था। समुद्र तट से आगे मोर्चे तक रसद–श्रंखला को सक्रिय बनाए रखने की उसकी क्षमता यह कार्यभार है कि जोधपुर की रियासती सेना युद्ध के दौरान केवल पारंपरिक सैनिक संगठन नहीं रही, बल्कि आधुनिक संयुक्त सैन्य अभियान की तकनीकी और साजो–सामान की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य करने में सक्षम इकाई बन चुकी थी। सितंबर 1943 के अंत तक सालेर्नो बंदरगाह के सशस्त्र बल हो जाने पर बीच ग्रुप का विशेष दायित्व पूरा हुआ।

प्रशिक्षण, विस्तार एवं कल्याण

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जोधपुर राज्य सेना का विस्तार केवल सैनिक संख्या की वृद्धि तक सीमित नहीं रहा, बल्कि प्रशिक्षण–पद्धति, तकनीकी दक्षता और सैनिक कल्याण की संस्थागत व्यवस्था में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। इसकी पृष्ठभूमि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद हुए सैन्य पुनर्गठन में दिखाई देती है, जब मारवाड़ दरबार ने नई भर्ती, प्रशिक्षण और नियमित सैन्य इकाइयों के पुनर्संगठन पर बल दिया था। द्वितीय विश्वयुद्ध में यंत्रीकरण के कारण यह प्रक्रिया अधिक तकनीकी स्वरूप ग्रहण कर गई।

जोधपुर लांसर्स के यंत्रीकरण के साथ उसके प्रशिक्षण स्क्वाड्रन को भी घुड़सवार प्रशिक्षण से यंत्रीकृत प्रशिक्षण व्यवस्था में बदलना पड़ा। प्रारम्भिक कठिनाई यह थी कि जोधपुर में न तो पर्याप्त कार्यशालाएँ थीं और न ही यंत्रीकृत युद्ध–प्रशिक्षण के विशेषज्ञ उपलब्ध थे। अतः प्रशिक्षण–पद्धति को भारतीय बख्तरबंद कोर प्रशिक्षण केंद्र, फिरोजपुर के अनुरूप विकसित किया गया। प्रारंभिक में भारतीय सेना से चार प्रशिक्षित एनसीओ बुलाए गए; बाद में जोधपुर के अधिकारियों और एनसीओ को ड्राइविंग और रखरखाव तथा वायरलेस जैसे तकनीकी पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित किया गया।

प्रशिक्षण का स्वरूप व्यापक था। सैनिकों को सामान्य वाहन–चालन के अतिरिक्त भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों, पहाड़ी और रेतीले भूभाग, रात्रिकालीन परिस्थितियों तथा गैस–मास्क पहनकर वाहन चलाने का अभ्यास कराया जाता था। प्रत्येक भर्ती में कम–से–कम तृतीय श्रेणी के कर्मचारियों की योग्यता प्राप्त की जाती थी, जिसके बाद उन्हें ड्राइवर मैकेनिक, गनर मैकेनिक, ड्राइवर ऑपरेटर या गनर ऑपरेटर जैसे विशेषज्ञ ज्योतिष के लिए अध्ययन किया जाता था। तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता के कारण सामान्य स्टार्टअप प्रशिक्षण भी कार्यक्रम का हिस्सा बनाया गया और कई कलररूट प्रतिदिन चार घंटे तक प्रशिक्षण–केंद्र के विद्यालय में अध्ययन करते थे।

युद्ध की आवश्यकताओं के साथ प्रशिक्षण–व्यवस्था का भौतिक और सैन्य विस्तार भी हुआ। अतिरिक्त गैरेज, वर्कशॉप, व्याख्यान कक्ष, असेंबली ग्राउंड तथा फायरिंग सुविधाएं विकसित की गईं। युद्ध के आरंभ में लांसर्स ट्रेनिंग सेंटर में 2 स्टेट ऑफिसर, 5 भारतीय ऑफिसर और 134 अन्य सैनिक एवं रंगरूट थे; 1944 के आरंभ तक यह संख्या बढ़कर 13 स्टेट ऑफिसर, 17 भारतीय ऑफिसर, 703 अन्य सैनिक एवं रंगरूट तथा 128 गैर–लड़ाके हो गई और केंद्र के पास 84 वाहन थे। यह वृद्धि स्पष्ट करती है कि प्रशिक्षण केंद्र केवल भर्ती तैयार करने वाली सहायक संस्था नहीं रहा, बल्कि जोधपुर की युद्धकालीन सैन्य क्षमता के विस्तार का प्रमुख आधार बन गया।

सैन्य विस्तार के साथ सैनिकों और उनके परिवारों के कल्याण को भी समृद्धि रूप दिया गया। 1943 में मुख्यालय पर संपर्क शाखा स्थापित की गई। मृत सैनिकों के प्रतिभाओं तथा पेंशन से वंचित पूर्व सैनिकों की आर्थिक सहायता को देखते हुए जोधपुर स्टेट फोर्सेज बेनेवोलेंट फंड बनाया गया। इसके लिए सैनिकों ने स्वेच्छा से एक माह के वेतन में प्रति रुपया एक आना देने पर सहमति व्यक्त की, जबकि महाराजा उम्मीद सिंह ने प्रतिवर्ष 5,000 रुपये प्रदान किए। इस प्रकार प्रशिक्षण, तकनीकी विस्तार और कल्याण–व्यवस्था का समानांतर विकास दर्शाता है कि युद्धकाल में जोधपुर राज्य सेना का आधुनिकीकरण केवल हथियार और युद्ध–पद्धति तक सीमित नहीं था, बल्कि उसने सैनिक संगठन और उसके सामाजिक आधार को भी अधिक संस्थागत स्वरूप प्रदान किया।

रियासती योगदान का मूल्यांकन

द्वितीय विश्वयुद्ध में जोधपुर राज्य का योगदान केवल युद्धक्षेत्र में भेजी गई सैन्य टुकड़ियों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सैनिक भर्ती, सैन्य विस्तार, यंत्रीकरण, परिवहन, प्रशिक्षण और सैनिक–परिवारों की सहायता तक विस्तृत था। इसकी पृष्ठभूमि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विकसित 'इम्पीरियल सर्विस ट्रूप्स' व्यवस्था में दिखाई देती है। 1888 के बाद जोधपुर में संगठित रियासती सेना के विकास और उसके प्रशिक्षण ने ऐसी संस्थागत आधारभूमि निर्मित की, जिस पर आगे आधुनिक जोधपुर स्टेट फोर्सेज का विकास हुआ। स्वयं शाह ने Marwar Administration Reports, राजस्थान राज्य अभिलेखागार की हकीकत बहियों और भारत सरकार के अभिलेखों के आधार पर इस सैन्य पुनर्गठन को रेखांकित किया है।

द्वितीय विश्वयुद्ध में इस पूर्ववर्ती सैन्य ढाँचे का विस्तार असाधारण था। युद्ध के प्रारंभ में जोधपुर स्टेट फोर्सेज की संख्या लगभग 1,700 थी, जो जुलाई 1945 तक बढ़कर 7,000 से अधिक हो गई; इसके अतिरिक्त मारवाड़ से हजारों व्यक्तियों की भर्ती भारतीय सेना के लिए भी की गई। यह वृद्धि केवल संख्यात्मक विस्तार नहीं थी। जोधपुर लांसर्स का यंत्रीकरण, सरदार इन्फैंट्री की विदेशी सेवा तथा नई सैन्य और प्रशिक्षण इकाइयों का गठन युद्ध की आवश्यकताओं के अनुरूप रियासती सेना के कार्यात्मक पुनर्गठन को दर्शाता है। डंकन के अनुसार जोधपुर लांसर्स भारतीय रेजिमेंटों की पहली घुड़सवार सेना अथवा पैदल सेना इकाई थी जिसे क्राउन फोर्सेज के साथ पूर्ण इकाई के रूप में सेवा के लिए लिया गया तथा वह यंत्रीकरण के लिए चुनी गई पहली स्टेट कैवलरी रेजिमेंट भी थी।

इस योगदान का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष युद्ध–तंत्र को उपलब्ध कराई गई सहायक सैन्य क्षमता थी। जोधपुर ने मोटर परिवहन इकाई तैयार की, जबकि अग्रिम इकाइयों के बाहर जाने से उत्पन्न आवश्यकता को पूरा करने के लिए लांसर्स और सरदार इन्फैंट्री के डिपो, 2nd जोधपुर इन्फैंट्री तथा बॉडीगार्ड स्क्वाड्रन का गठन किया गया। युद्धकालीन भर्ती का पैमाना भी उल्लेखनीय थाकृयुद्ध से पूर्व औसत लगभग 120 रंगरूट प्रतिवर्ष के लिए जाते थे, जबकि युद्धकाल में 7,000 से अधिक रंगरूट जोधपुर राज्य फोर्सेज में भर्ती किए गए।

रियासती योगदान आर्थिक और प्रशासनिक स्तर पर भी स्पष्ट था। युद्ध के प्रारंभिक चरण में महाराजा उम्मेद सिंह द्वारा वायसराय के युद्ध प्रयोजन कोष में तीन लाख रुपये दिए गए और उनके निजी विमान

युद्ध–प्रयासों के लिए हथियार उपलब्ध कराए गए। राज्य सरकार ने अपने कर्मचारियों को सैन्य सेवा ग्रहण करने के लिए नौकरी, वृद्धावस्था, वेतन–भत्ता और सेवा–लाभ की सुरक्षित व्यवस्था की व्यवस्था और सैनिकों को पृथक्करण भत्ता दिया।

अतः जोधपुर का योगदान सैनिक आपूर्ति मात्र नहीं था। 7,000 से अधिक की सैन्य शक्ति, यंत्रीकृत लांसर्स, विदेशी सेवा, परिवहन एवं प्रशिक्षण व्यवस्था और सैनिक–कल्याण को समग्र रूप में देखने पर स्पष्ट होता है कि द्वितीय विश्वयुद्ध ने जोधपुर की रियासती सैन्य व्यवस्था को अधिक विस्तृत, तकनीकी और संगठित सैन्य तंत्र में परिवर्तित किया। यह परिवर्तन पूर्ववर्ती सैन्य आधुनिकीकरण की निरंतरता भी था; 1920 के दशक के पुनर्गठन के बाद यही सेना 1939 तक आंतरिक रक्षा और गार्ड ड्यूटी करती रही और युद्ध के दौरान चार गुना से अधिक विस्तारित होकर अनेक इकाइयों को विदेश भेजने में सक्षम हुई।

निष्कर्ष

द्वितीय विश्वयुद्ध में जोधपुर राज्य सेना की भूमिका का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि 1939–1945 के काल मारवाड़ की सैन्य परंपरा में विस्तार, तकनीकी परिवर्तन और अंतरराष्ट्रीय सैन्य अनुभव का महत्वपूर्ण चरण था। यह परिवर्तन किसी आकस्मिक युद्धकालीन व्यवस्था का परिणाम मात्र नहीं था। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में इंपीरियल सर्विस ट्रूप्स की स्थापना के साथ जोधपुर की सेना में नियमित संगठन, प्रशिक्षण और अनुशासन की जो प्रक्रिया आरंभ हुई, उसने आगे बढ़ते आधुनिक सैन्य संरचना के लिए आधार तैयार किया था। 1920 के दशक के पुनर्गठन में सरदार रिसाला, सरदार इन्फैंट्री, ट्रांसपोर्टेशन कोर और मिलिट्री स्टेशन हॉस्पिटल जैसी इकाइयों को अधिक व्यवस्थित स्वरूप दिया गया; द्वितीय विश्वयुद्ध के आरंभ तक ये इकाइयां मुख्यतः आंतरिक सुरक्षा और गार्ड ड्यूटी में काम करती थीं।

युद्ध ने इस पूर्ववर्ती सैन्य ढांचे को असाधारण रूप से विस्तृत किया। सितंबर 1939 में लगभग 1,700 सैनिकों वाली जोधपुर राज्य सेना की संख्या जुलाई 1945 तक 7,000 से अधिक हो गई; इसके अतिरिक्त मारवाड़ से हजारों सैनिक भारतीय सेना में भी भर्ती हुए। यह वृद्धि केवल उत्तराधिकार विस्तार नहीं थी। जोधपुर लांसर्स का अश्वारोही इकाई से यंत्रीकृत सैन्य संगठन की ओर संक्रमण, प्रशिक्षण केंद्रों का विस्तार तथा सैनिकों को आधुनिक परिवहन और युद्ध–पद्धति के अनुरूप तैयार करना इस परिवर्तन के तकनीकी पक्ष को सामने लाता है। पूर्ववर्ती सैन्य संगठन की दक्षता का महत्व इस तथ्य से भी स्पष्ट होता है कि युद्धकाल में राज्य सेना अपनी मूल संख्या से चार गुना से अधिक बढ़ी हुई और उसकी अनेक इकाइयों ने ब्रिटिश तथा भारतीय सेना के साथ विदेश में सेवा की।

विदेशी अभियानों में जोधपुर सरदार इन्फैंट्री का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। इरिट्रिया और मिस्र में सेवा के बाद सितंबर 1943 के सालेर्नो अभियान में इसकी सात कंपनियां 35वें बीच ग्रुप के अधीन काम कर रही थीं। कठिन युद्ध–परिस्थितियों में मेजर राम सिंह के नेतृत्व तथा कैप्टन डूंगर सिंह द्वारा अग्रिम मोर्चे तक गोला–बारूद और सैन्य सामग्री पहुंचाने के कार्य को औपचारिक सैन्य मान्यता मिली; राम सिंह को DSO और डूंगर सिंह को मिलिट्री क्रॉस प्रदान किया गया। इससे स्पष्ट है कि जोधपुर की भूमिका केवल सैनिक उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसकी इकाइयां प्रत्यक्ष युद्ध, रसद और सामरिक सहायता के स्तर पर भी सक्रिय थीं।

फिर भी जोधपुर राज्य सेना के योगदान का मूल्यांकन केवल युद्धभूमि की उपलब्धियों के आधार पर करना अधूरा होगा। सभी इकाइयों को प्रत्यक्ष युद्ध का अवसर नहीं मिला। लांसर्स ने युद्ध का बड़ा हिस्सा कठोर प्रशिक्षण में बनाने और 1944 में फारस तथा इराक भेजे गए, जबकि द्वितीय जोधपुर इन्फैंट्री के अनेक कार्य नियमित और गैर–युद्धक प्रकृति के रहे। इसके बावजूद प्रशिक्षण केंद्रों और मुख्यालय ने लगातार बढ़ती सेना के लिए भर्ती, प्रशिक्षण और पुनर्बलन की व्यवस्था बनाए रखी। अतः जोधपुर का वास्तविक सैन्य योगदान लड़ाकू

और गैर–लड़ाकू दोनों संरचनाओं के संयुक्त ढाँचे में समझा जाना चाहिए। समग्र रूप से, द्वितीय विश्वयुद्ध ने जोधपुर राज्य सेना को पारंपरिक सैन्य संगठन से अधिक विस्तृत और तकनीकी रूप से अनुकूलित सैन्य शक्ति में परिवर्तित किया। राज्य सरकार, सैन्य मुख्यालय और भारतीय राज्य बलों के केंद्रीय सैन्य तंत्र के बीच सहयोग ने इस विस्तार को संभव बनाया। इस प्रकार जोधपुर राज्य सेना का युद्धकालीन अनुभव मारवाड़ की पुरानी सैन्य परंपरा और बीसवीं शताब्दी की आधुनिक युद्ध–पद्धति के बीच संक्रमण को निर्देशांक करता है। इसका ऐतिहासिक महत्ता इसी में निहित है कि एक क्षेत्रीय सैन्य सेना ने अपनी दर्जनों पहचान बनाए रखते हुए स्वयं को द्वितीय विश्वयुद्ध की व्यापक सैन्य व्यवस्था के अनुरूप ढाला और विदेशी युद्ध क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पर्किन्स, रोजर, Regiments: Regiments and Corps of the British Empire and Commonwealth, 1758–1993: A Critical Bibliography of Their Published Histories. न्यूटर एबॉट, डेबोन : रोजर पर्किन्स 1994 पृ. 383।
2. शाह. पी. आर. Raj Marwar During British Paramountcy: A Study in Problems and Policies Up to 1923. जोधपुर : शारदा पब्लिशिंग हाउस, 1982 पृ. 106; Marwar Administration Report 1889–90, 130–40
3- शाह. पी. आर. Raj Marwar During British Paramountcy: A Study in Problems and Policies Up to 1923. जोधपुर : शारदा पब्लिशिंग हाउस, 1982 पृ. 116; Marwar Administration Report 1924–26, 11–12
4. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 194, 244।
5. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 191–93।
6. शाह. पी. आर. Raj Marwar During British Paramountcy: A Study in Problems and Policies Up to 1923. जोधपुर : शारदा पब्लिशिंग हाउस, 1982 पृ. 106; Marwar Administration Report 1889–90, 130–31
7- [1](Shah 111–13; Van Wart 203, 213, 216; Reu 597–98
8. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 9–10।
9. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 185–86।
10. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 30–31।
11. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 62–64।
12. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 66–72।
13. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 79–80।

14. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 89–90।

15. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 91–93।

16. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 97–98।

17. शाह. पी. आर. Raj Marwar During British Paramountcy: A Study in Problems and Policies Up to 1923. जोधपुर : शारदा पब्लिशिंग हाउस, 1982 पृ. 114–15।

18. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 6।

19. शाह. पी. आर. Raj Marwar During British Paramountcy: A Study in Problems and Policies Up to 1923. जोधपुर : शारदा पब्लिशिंग हाउस, 1982 पृ. 105–07।

20. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 240।

21. डंकन, रोनाल्ड काडर्यू, History of the Jodhpur State Forces in the War, 1939–45. जोधपुर : जोधपुर गवर्नमेंट प्रेस, 1946, पृ. 243।

22. शाह. पी. आर. Raj Marwar During British Paramountcy: A Study in Problems and Policies Up to 1923. जोधपुर : शारदा पब्लिशिंग हाउस, 1982 पृ. 116–117।

❑❑❑